परम ब्रह्म हो अगम अगोचर।
माया चेरी तुम्हरी हरिहर।36।

आप अगम, अगोचर, परम ब्रह्म हैं। आपकी महिमा अपरम्पार है। हे विष्णु और शिव के सम्मिलित स्वरूप हरिहर! माया आपकी दासी है।

तीनों भुवन प्रकाश तुम्हारा।
हर प्राणी में वास तुम्हारा।37।

तीनों लोक आपकी ज्योति से प्रकाशमान हैं और हर प्राणी में आपका वास है।

बिन बोले सब जानो मन की
पीड़ा हरते आरत जन की।38।

आप बिना कहे मन की सब बातें जान लेते हैं और दुःखी पीड़ित प्राणियों के क्लेशों को हर लेते हैं।

जो निश दिन साई को ध्यावे।
वो भवसागर से तर जावे।39।

जो नित्य साई का ध्यान करता है, वह संसार रूपी समुद्र से तर जाता है।